साम्राज्यवादी बहीखाता: दुनिया के सबसे बड़े ड्रग कार्टेल का पर्दाफाश

CRIMINOLOGICAL INSIGHTS

BY DR. MRIDUL SRIVASTAVA

CALCUTTA PUBLICK LIBRARY

साम्राज्यवादी बहीखाता: दुनिया के सबसे बड़े ड्रग कार्टेल का पर्दाफाश

1857 के दस्तावेज़ों पर आधारित — कैसे ब्रिटिश साम्राज्य ने मुनाफ़े के लिए चीन और भारत को तबाह किया।

CALCUTTA PUBLICK LIBRARY

अफीम व्यापार: ब्रिटिश भारत का राजस्व बनाम चीन का विनाश

यह इन्फोग्राफिक 1857 के एक ऐतिहासिक दस्तावेज पर आधारित है, जो भारत से चीन को होने वाले अफीम के निर्यात का विश्लेषण करता है। यह दर्शाता है कि कैसे ब्रिटिश सरकार ने भारी वित्तीय लाभ के लिए एक व्यसनकारी औषधि (Drug) का एकाधिकार बनाए रखा, जबकि इसके मानवीय परिणाम विनाशकारी थे।

व्यापार का विशाल पैमाना और राजस्व

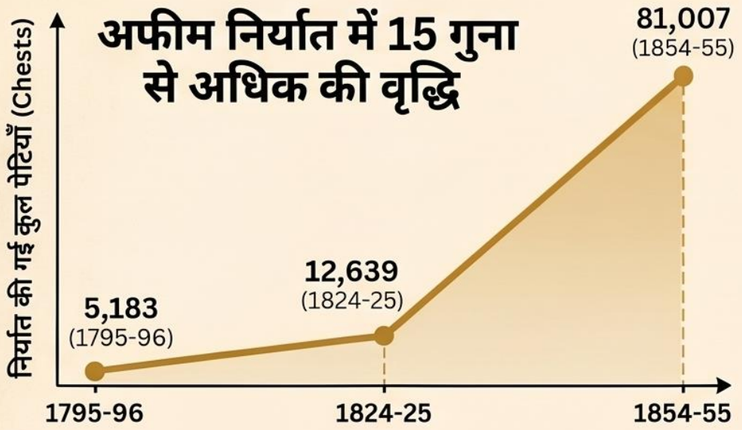

£3.2 मिलियन से अधिक का शुद्ध वार्षिक लाभ

1854-55 में अफीम व्यापार से प्राप्त शुद्ध राजस्व ब्रिटिश साम्राज्य की आय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था।

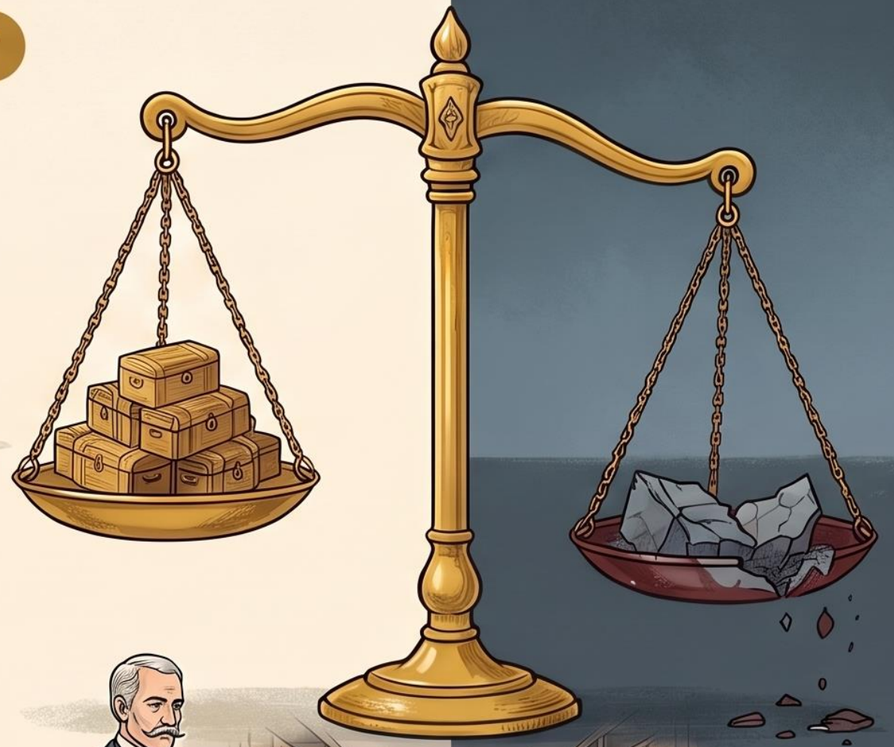

सरकारी एकाधिकार (Monopoly) का नियंत्रण

बंगाल और बॉम्बे में अफीम की खेती और बिक्री पूरी तरह से ब्रिटिश सरकार के नियंत्रण में थी।

नैतिक संकट और मानवीय प्रभाव

"राष्ट्रीय कलंक" और नैतिक पतन

समकालीन लेखकों ने इसे चीनियों के जीवन की कीमत पर ब्रिटिश सम्मान का सौदा और "राष्ट्रीय अपमान" माना।

"चीनी पैसा बनाम चीनी जीवन"

यह व्यापार ब्रिटिश भारत के लिए राजस्व तो लाया, लेकिन चीन के लिए केवल बर्बादी और मृत्यु लाया।

समाज और स्वास्थ्य पर विनाशकारी प्रभाव

अफीम के सेवन से चीन और भारत (असम) के स्थानीय समुदायों में गरीबी, अपराध और शारीरिक गिरावट आई।

1856 की ‘एरो’ घटना: युद्ध का बहाना बनाम असली मकसद

छलावरण/ CONCEALED

बहाना (The Pretext)

- ⚓ ब्रिटिश झंडे का कथित अपमान।
- ⚓ हांगकांग में पंजीकृत एक चीनी जहाज (‘Arrow’) पर चीनी अधिकारियों द्वारा समुद्री लुटेरों को पकड़ने के लिए छापेमारी।
- ⚓ ब्रिटिश अधिकारियों (Sir John Bowring) द्वारा इसे ‘राष्ट्रीय अपमान’ बताकर युद्ध की शुरुआत।

असली मकसद (The Reality)

- ⚓ ‘Arrow’ का लाइसेंस समाप्त हो चुका था और वह अवैध व्यापार में लिप्त था।
- ⚓ असली उद्देश्य चीन पर दबाव डालकर उस अवैध व्यापार की रक्षा करना था, जो ब्रिटिश साम्राज्य की रीढ़ बन चुका था — **अफ़ीम की तस्करी।**

एक राज्य-प्रायोजित कार्टेल की संरचना

छलावरण/ CONCEALED

Step 1:

नकद एडवांस

ब्रिटिश सरकार भारतीय किसानों (रैयत) को अफ़ीम उगाने के लिए अग्रिम धनराशि देती है।

Step 2:

अनिवार्य निष्कर्षण

किसानों को एक निश्चित (और बहुत कम) कीमत पर पूरा अफ़ीम का रस सरकार को ही बेचने के लिए मजबूर किया जाता है।

Step 3:

चीनी बाज़ार के लिए प्रसंस्करण

कलकत्ता की सरकारी फैक्ट्रियों में इस रस को विशेष रूप से चीनी ग्राहकों की पसंद के अनुसार तैयार और स्वादिष्ट (flavoured) बनाया जाता है।

Step 4:

खुलेआम नीलामी और तस्करी

सरकार इसे कलकत्ता में सट्टेबाजों को बेचती है, जो ब्रिटिश झंडे के नीचे तेज़ जहाज़ों (Clippers) के ज़रिए चीन के तटों पर इसकी तस्करी करते हैं।

छलावरण/CONCEALED

साम्राज्य का वित्तीय इंजन

£5,000,000

(लॉर्ड डलहौज़ी का 1856 का अनुमान)

पूरे भारतीय साम्राज्य के कुल राजस्व का 1/6 हिस्सा केवल अफ़ीम के एकाधिकार से आता था।

The Profit Margin
• किसान को भुगतान: £25 (प्रति पेटी) • सरकार द्वारा बिक्री: £100 • सट्टेबाज़ द्वारा चीन में बिक्री: £150

स्रोत: 1854-55 के शुद्ध राजस्व आंकड़े

छलावरण/CONCEALED

मुनाफ़ा और तबाही का ग्राफ़ (1795 - 1855)

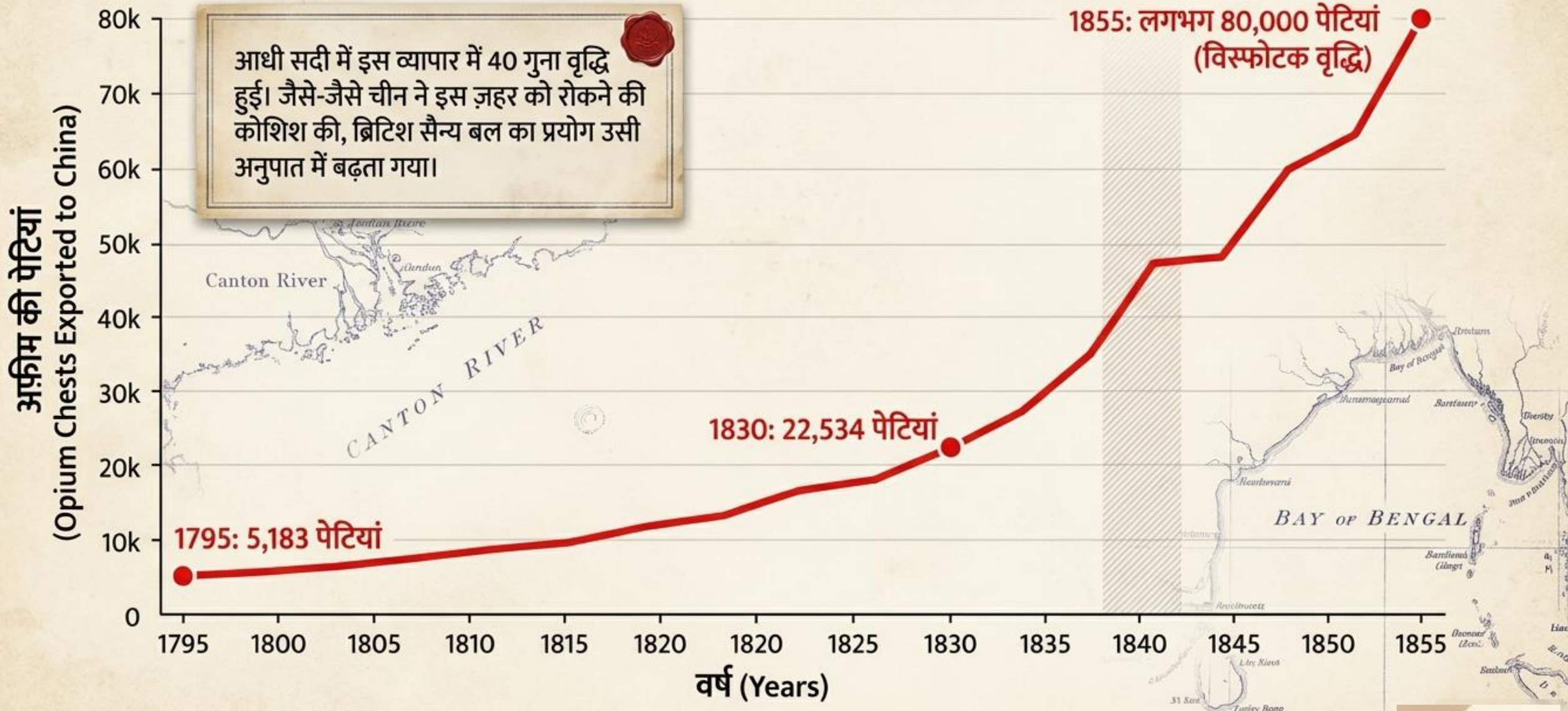

भारत की कीमत: ज़मीन और लोगों का शोषण

छलावरण/CONCEALED

- **कृषि विनाश:** भारत की 400,000 एकड़ सबसे उपजाऊ ज़मीन (विशेषकर बंगाल में) खाद्यान्न के बजाय केवल अफ़ीम की खेती के लिए आरक्षित कर दी गई।
- **नैतिक और शारीरिक पतन:** जिन क्षेत्रों में यह उगाया गया, वहां के स्थानीय निवासियों का भी भयानक पतन हुआ।

> **अफ़ीम उत्पादन** ने असम जैसे सुंदर देश को वीरान कर दिया है...और वहां के लोगों को भारत की सबसे दयनीय, चापलूस और पतनशील नस्ल में बदल दिया है।
>
> — (असम में चाय बागान के अधीक्षक, 1840)

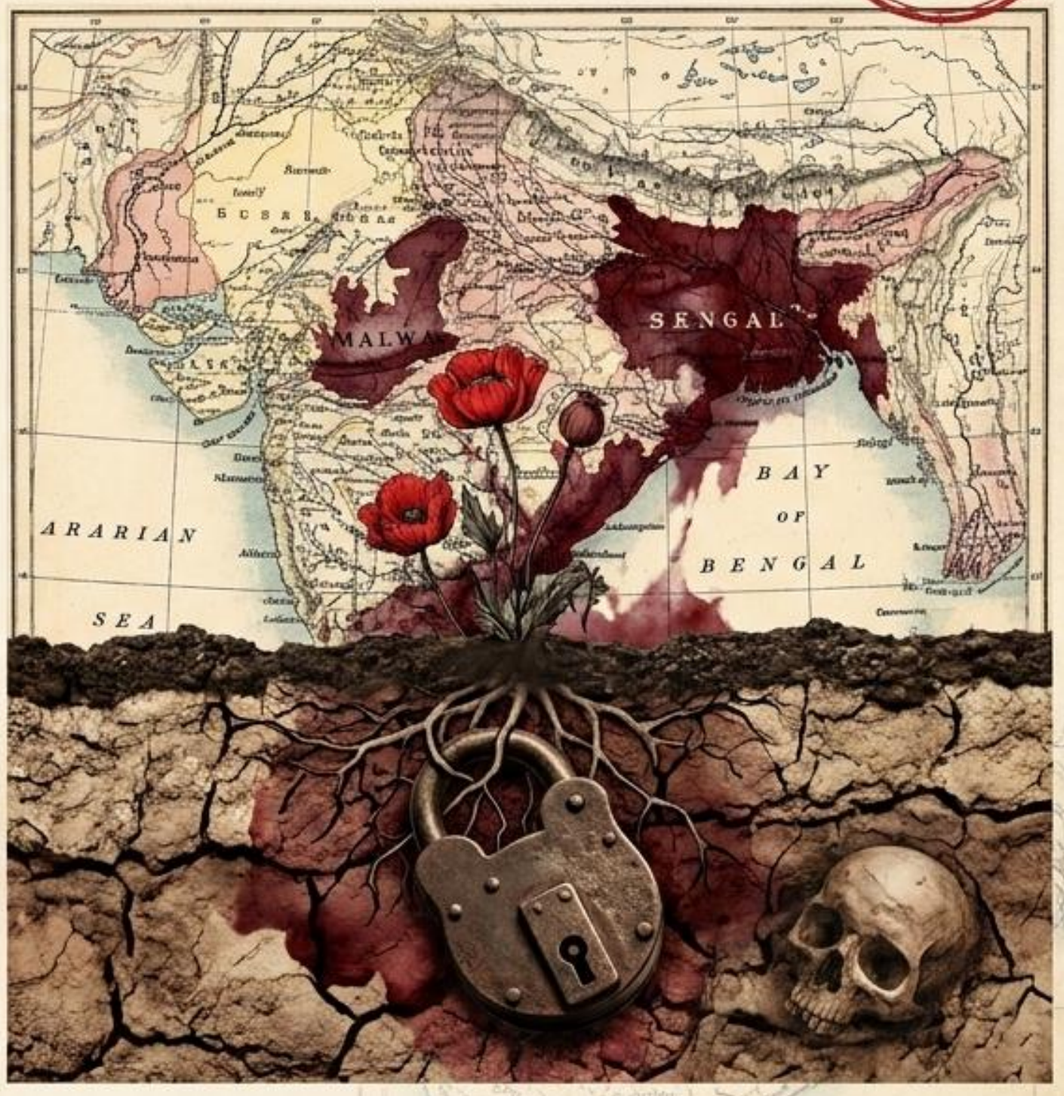

अफ़ीम बनाम शराब: एक घातक व्यसन का निदान

	शराब (Alcohol)	अफ़ीम (Opium)
सामाजिक प्रभाव - Social Impact	शराबी को अक्सर हिंसक और समाज के लिए खतरा माना जाता है।	अफ़ीम पीने वाला खुद को पूरी तरह सुन्न कर लेता है और अपने परिवार/काम के प्रति मृत समान हो जाता है।
शारीरिक प्रभाव - Physical Impact	उत्तेजना और उग्रता पैदा करती है।	शरीर को पूरी तरह दुर्बल कर देती है; नियमित खुराक न मिलने पर भयानक शारीरिक पीड़ा (डिस्चार्ज, अंगों का टूटना) होती है।
अफ़ीम इंसान की स्वतंत्र इच्छा (Free Will) को खत्म कर देती है।		

धरती पर अफ़ीम की गुलामी से तुलना करने योग्य कोई और गुलामी नहीं है। एक बार जब यह इंसान को अपने चंगुल में ले लेती है, तो बचने का कोई रास्ता नहीं बचता।

दो साम्राज्यों की कहानी: नैतिकता बनाम मुनाफ़ा

ब्रिटिश सरकार ('सभ्य' और 'ईसाई')

- **दृष्टिकोण:** जानबूझकर एक अवैध तस्करी नेटवर्क को राज्य की नीति के रूप में चलाती है।
- **प्राथमिकता:** विदेशी आबादी के विनाश की कीमत पर प्रति वर्ष **£5,000,000** का राजस्व अर्जित करना।

चीनी सम्राट ('असभ्य' और 'गैर-ईसाई')

- **दृष्टिकोण:** अफ़ीम को अनैतिक और विनाशकारी मानता है, भारी वित्तीय नुकसान सहकर भी इसे वैध करने से इनकार करता है।
- **प्राथमिकता:** अपने लोगों के स्वास्थ्य और जीवन की रक्षा करना।

"यह सच है कि मैं बहते हुए ज़हर को रोक नहीं सकता... लेकिन कोई भी चीज़ मुझे अपने लोगों के दुख और दुर्व्यसनों से राजस्व प्राप्त करने के लिए प्रेरित नहीं कर सकती।"

मिशनरी का विरोधाभास: एक हाथ में बाइबिल, दूसरे में अफ़ीम

अंग्रेज़ व्यापारी चीन में ऐसा पदार्थ सप्लाई कर रहे थे जो शारीरिक और मानसिक रूप से एक पूरी कौम को नष्ट कर रहा था।

उसी समय, ब्रिटिश मिशनरी चीनियों को धर्म का पाठ पढ़ाने की कोशिश कर रहे थे।

> आप यह ज़हर हमारे पास लाते हैं, और फिर हमें इसका उपयोग न करने के लिए कहते हैं... हम उस धर्म को कैसे मान लें जो हमारे धर्म से बेहतर होने का दावा करता है, लेकिन हमारे बच्चों को बर्बाद करने वाला यह गंदा ज़हर साथ लाता है?

साम्राज्यवादी कलंक का त्रिकोण (The Triangle of Imperial Disgrace)

कलंक
[IMPERIAL DISGRACE]

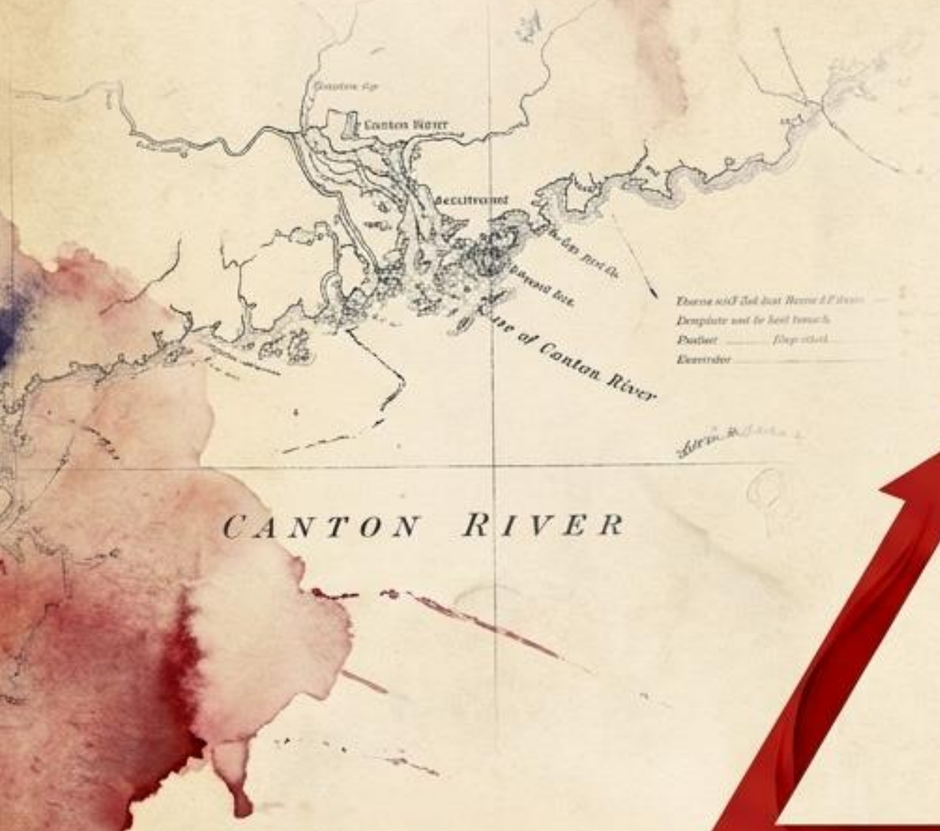

ब्रिटेन (The Beneficiary)

भूमिका: मुनाफ़ाखोर। दोनों देशों का शोषण करके 'यूनियन जैक' (ब्रिटिश झंडे) के संरक्षण में विशाल साम्राज्यवादी राजस्व इकट्ठा किया।

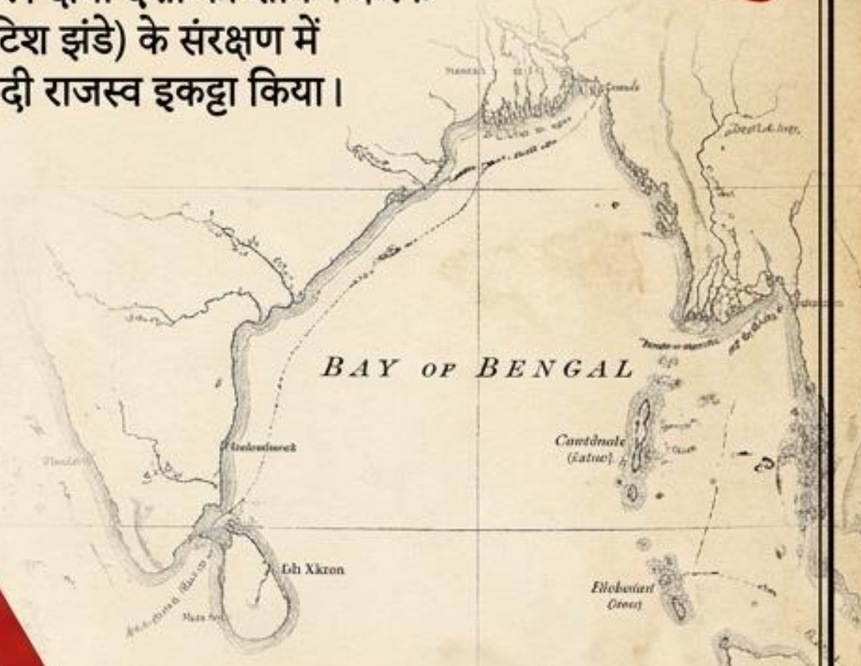

भारत (The Soil)

भूमिका: शोषित। लाखों एकड़ बेहतरीन कृषि भूमि नष्ट। किसानों को कम कीमत पर अफ़ीम उगाने के लिए मजबूर किया गया।

चीन (The Victim)

भूमिका: ज़हर का शिकार।
लगभग 4,700,000 नागरिक नशे के गुलाम बने।
देश की चांदी (Silver) का बड़े पैमाने पर निकास।

प्रायश्चित का मार्ग: एकाधिकार का अंत

1857 में ही यह स्पष्ट हो गया था कि यह व्यापार एक 'राष्ट्रीय पाप' है। इसे रोकने के लिए ये कदम आवश्यक बताए गए थे:

1

1. सरकारी एकाधिकार समाप्त करें:
बिटिश-भारतीय सरकार को तुरंत अफ़ीम के निर्माण और बिक्री से खुद को अलग करना चाहिए।

2

2. खेती पर प्रतिबंध:
औषधीय उपयोग को छोड़कर, अफ़ीम की खेती पर क्रमिक रूप से पूरी रोक लगानी चाहिए।

3

3. निर्यात पर रोक:
ब्रिटिश क्षेत्रों से चीन को होने वाले इस अवैध निर्यात को हमेशा के लिए बंद किया जाना चाहिए।

सच्चा सम्मान शांति और न्याय में है, एक पूरी सभ्यता को ज़हर बेचकर कमाए गए मुनाफ़े में नहीं।